✹ 04 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✹

✹ ज्ञान-

1] सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। वह तो एक जन्म के लिए पावन बनने हैं। ऐसे बहुत हैं जो इस जन्म में बाल ब्रह्मचारी रहते हैं। वह कोई दुनिया को मदद नहीं दे सकते हैं पवित्रता की। मदद तब हो जबकि श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।

2] मीठे-मीठे बच्चे यह भी जानते हो- शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते। तुमको इतने वर्ष हुए हैं फिर भी ज्ञान की धारणा क्यों नहीं होती है। सोने के बर्तन में ही धारणा होगी।

3] कोई विकारी यहाँ अन्दर (मधुबन में) आ न सके। बीमारी आदि में भी विकारी मित्र-सम्बन्धी आयें, यह तो अच्छा नहीं। पसन्द भी हम न करें। नहीं तो अन्तकाल वह मित्र-सम्बन्धी ही याद पड़ेंगे। फिर वह ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। बाप तो पुरूषार्थ कराते हैं, कोई को भी याद न आये। ऐसे नहीं, हम बीमार हैं इसलिए मित्र-सम्बन्धी आदि आयें देखने के लिए। नहीं, उन्हों को बुलाना, कायदा नहीं। कायदेसिर चलने से ही सद्‌गति होती है। नहीं तो मुफ्त अपने को नुकसान पहुँचाते हैं। परन्तु तमोप्रधान बुद्धि यह समझते नहीं हैं। ईश्वर राय देते हैं तो भी सुधरते नहीं। बड़ा खबरदारी से चलना चाहिए। यह है होलीएस्ट ऑफ होली स्थान। पतित ठहर न सकें। मित्र-सम्बन्धी आदि याद होंगे तो मरने समय जरूर वह याद आयेंगे। देह-अभिमान में आने से अपने को ही नुकसान पहुँचाते हैं। सज़ा के निमित्त बन पड़ते हैं। श्रीमत पर न चलने से बड़ी दुर्गति हो जाती है। सर्विस लायक बन न सके। कितना भी माथा मारे परन्तु सर्विस लाय हो नहीं सकते। अवज्ञा की तो पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। ऊपर चढ़ने बदले नीचे गिर जाते हैं। बाप तो कहेंगे बच्चों को आज्ञाकारी बनना चाहिए। नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा।

4] इस परमात्म ज्ञान की नवीनता ही पवित्रता है। फलक से कहते हो कि आग-कपूस इक्ट्ठा रहते भी आग नहीं लग सकती। विश्व को आप सबकी यह चैलेन्ज है कि पवित्रता के बिना योगी वा ज्ञानी तू आत्मा नहीं बन सकते।

5] पवित्रता आपके जीवन का मुख्य फाउन्डेशन है, धरत परिये धर्म न छोड़िये।

✹ योग-

1] चलते फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों का याद की यात्रा से विनाश करते हैं। यह तो आत्मा जानती है, हम जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप कटते जायेंगे।

2] तुम यहाँ आये हो बेहद पवित्र बनने के लिए, सो बनेंगे ही याद की यात्रा से। कई तो बिल्कुल याद कर नहीं सकते, कई समझते हैं हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।

3] बाप ने समझाया है यह भी पुरूषार्थ है, जो जितना याद करते हैं तो उनके भी पाप कटते हैं। याद की यात्रा बिगर तो पवित्र बन नहीं सकेंगे। उठते, बैठते, चलते यही ओना रखना है।

4] बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से। बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो। देह के सम्बन्ध सब त्याग करता पड़े। मित्र-सम्बन्धियों आदि की भी याद न रहे, सिवाए एक बाप के, तब ही ऊंच पद पा सकेंगे। याद नहीं करेंगे तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। यह बापदादा भी समझ सकते हैं।

✹ 04 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✹

[2]

✹ धारणा-

1] मीठे बच्चे– सदा श्रीमत पर चलना- यही श्रेष्ठ पुरूषार्थ है, श्रीमत पर चलने से आत्मा का दीपक जग जाता है।

2] पूरा पुरूषार्थ वही कर सकते जिनका अटेन्शन वा बुद्धियोग एक में है। सबसे ऊंचा पुरूषार्थ है बाप के ऊपर पूरा-पूरा कुर्बान जाना। कुर्बान जाने वाले बच्चे बाप को बहुत प्रिय लगते हैं।

3] बच्चे, बेहद की पवित्रता को धारण करो। जब यहाँ बेहद पवित्र बनेंगे, ऐसा ऊंचा पुरूषार्थ करेंगे तब लक्ष्मी-नारायण के राज्य में जा सकेंगे अर्थात् सच्ची-सच्ची दीपावली वा कारोनेश डे मना सकेंगे।

4] बच्चो को घड़ी-घड़ी यह भूल जाता है कि हम ईश्वरीय सन्तान हैं तो हमको ईश्वरीय मत पर ही चलना चाहिए, न कि अपनी मनमत पर। मनमत मनुष्य मत को कहा जाता है। मनुष्य मत आसुरी ही होती है। जो बच्चे अपना कल्याण चाहते हैं वह बाप को अच्छी रीति याद करते रहते हैं, सतोप्रधान बनने के लिए। सतोप्रधान की महिमा भी होती है। बरोबर जानते हैं हम सुखधाम के मालिक बनते हैं नम्बरवार। जितना-जितना श्रीमत पर चलते हैं, उतना ऊंच पद पाते हैं, जितना अपनी मत पर चलते तो पद भ्रष्ट हो जायेगा।

5] श्रीमत पर चलने से ही सुधरते हैं। क्रोध पर पुरूषार्थ करते-करते जीत पाते हैं। तो बाप भी समझाते हैं, खराबियों को निकालते रहो। क्रोध भी बड़ा खराब है। अपने अन्दर को भी जलाते हैं, दूसरे को भी जलाते हैं। वह भी निकलना चाहिए। बच्चे बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो पद कम हो जाता है, जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है।

6] मेहनत करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। तो अपने कल्याण के लिए सब सम्बन्ध भुला देने हैं। सिवाए एक बाप के किसको भी याद नहीं करना है। घर में रहते सम्बन्धियों को देखते हुए शिवबाबा को याद करना है। तुम हो संगमयुग पर, अब अपने नये घर को, शान्तिधाम को याद करो।

7] तो पवित्रता अर्थात् सम्पूर्ण लगाव-मुक्त। किसी भी व्यक्ति वा साधनों से भी लगाव न हो।

✹ सेवा-

1] ऐसी पवित्रता द्वारा ही प्रकृति को पावन बनाने की सेवा कर सकेंगे।